एपीडा और आईआरआरआई दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र ने स्वास्थ्यवर्धक चावल-आधारित खाद्य नवाचारों के लिए कार्यशाला आयोजित की

एपीडा की पहल गैर-बासमती चावल किस्मों के निर्यात को बढ़ावा देगी

प्रविष्टि तिथि: 02 SEP 2024 1:22PM by PIB Delhi

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के तहत कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) ने आईआरआरआई दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (आईएसएआरसी) के साथ मिलकर "गैर-बासमती चावल की संभावित किस्मों और चावल के मूल्य वर्धित उत्पादों की रूपरेखा" पर 29 अगस्त 2024 को नई दिल्ली में एक कार्यशाला का आयोजन किया।

इस कार्यशाला में देश के विभिन्न राज्यों के भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग जर्मप्लाज्म के साथ कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स (जीआई) के उच्च गुणवत्ता वाले सुगंधित, पोषक तत्व युक्त चावल की किस्मों की पहचान करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए दो अग्रणी अनुसंधान परियोजनाओं, "गैर-बासमती चावल की व्यापक अनाज और पोषण गुणवत्ता प्रोफाइलिंग" और "चावल और चावल-आधारित खाद्य प्रणालियों से मूल्य वर्धित उत्पाद" के परिणाम प्रदर्शित किए गए। "चावल और चावल-आधारित खाद्य प्रणालियों से मूल्य वर्धित उत्पाद" नामक परियोजना का उद्देश्य पोषक तत्वों से भरपूर चावल मूसली, साबुत अनाज चावल कुकीज़ पॉप्ड चावल, चावल के टुकड़े और तत्काल उपमा जैसे नवीन, स्वास्थ्यवर्धक चावल-आधारित उत्पाद बनाना है।

एपीडा द्वारा समर्थित ये महत्वपूर्ण परियोजनाएं वाराणसी में आईआरआरआई के दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र में चावल मूल्य संवर्धन प्रयोगशाला में अत्याधुनिक उत्कृष्टता केंद्र में संचालित की जाती हैं। इस कार्यक्रम के दौरान, आईआरआरआई ने देश भर में संभावित गैर-बासमती चावल की किस्मों की रूपरेखा प्रस्तुत की और वैश्विक बाजार क्षमता वाले मूल्यवर्धित उत्पादों का प्रदर्शन किया।

वाणिज्य विभाग के अपर सचिव, श्री राजेश अग्रवाल ने अपने मुख्य भाषण में गैर-बासमती चावल की संभावित किस्मों पर केंद्रित अनुसंधान के लिए एपीडा और आईआरआरआई के संयुक्त प्रयासों को स्वीकार किया और उनकी सराहना की। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि इस संयुक्त पहल में बड़ी संभावनाएं हैं और गैर-बासमती चावल की पहचानी गई किस्मों में न केवल महत्वपूर्ण निर्यात क्षमता है, बल्कि कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स जैसे स्वास्थ्य लाभ भी हैं और यह जलवायु अनुकूल है। उन्होंने इन किस्मों की निर्यात संभावना और विपणन क्षमता का दोहन करने के लिए गैर-बासमती चावल किस्मों के मूल्य संवर्धन और ब्रांडिंग पर भी ध्यान आकर्षित किया।

एपीडा के अध्यक्ष, श्री अभिषेक देव ने देश में चावल उद्योग के महत्व, मूल्यवर्द्धन की जरूरत और स्थिरता तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार लाने हेतु अनुसंधान पर कुछ महत्वपूर्ण जानकारियां साझा की। उन्होंने चावल निर्यात बढ़ाने और मूल्य श्रृंखला में सभी हितधारकों को लाभ पहुंचाने के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता भी व्यक्त की। इसके अलावा, उन्होंने चावल निर्यात और चावल से बने उत्पादों को बढ़ाने के लिए रणनीतियां विकसित करने के शुरुआती प्रयास पर बल दिया। इसके अतिरिक्त, अपने संबोधन के दौरान, एपीडा के अध्यक्ष ने भी आईएसएआरसी के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा, "ये परियोजनाएं न केवल स्वस्थ भोजन विकल्पों की बढ़ती मांग का जवाब देती हैं, बल्कि मूल्यवर्धित उत्पाद बनाने के लिए पारंपरिक चावल की किस्मों का भी उपयोग करती हैं।"

एपीडा की पहलों की सफलता के आधार पर, हितधारकों के साथ रणनीतिक सहयोग, औद्योगिक हितधारकों द्वारा लक्षित विपणन प्रयासों के साथ-साथ, घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजार पहुंच का विस्तार करने में महत्वपूर्ण होगा, जिससे प्रीमियम अर्थव्यवस्था में योगदान होगा और गैर-बासमती श्रेणी के तहत निर्यात संभावना बढ़ेगी।

एपीडा के समर्थन ने इन परियोजनाओं की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिसने आईएसएआरसी को अग्रणी प्रगति करने में सक्षम बनाया है और जो भारत के चावल उद्योग के भविष्य को आकार देगा। कम जीआई चावल की किस्मों और पोषक तत्वों से भरपूर मूल्यवर्धित उत्पादों को विकसित करने का संयुक्त दृष्टिकोण भारत की निर्यात क्षमताओं को बढ़ावा देने तथा कृषि और खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र के भीतर महत्वपूर्ण आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए तैयार है।

***

एमजी/एआर/एसके/एसएस

(रिलीज़ आईडी: 2050835) आगंतुक पटल : 277
इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Manipuri , Urdu , Tamil